SUBJECT :- Knowledge Language and Curriculum

Imp TOPIC :- पाठ्यक्रम प्रतिमान के आधार

पाठ्यक्रम प्रतिमान के प्रमुख आधार निम्न प्रकार है -

1. मानव जाति के अनुभव

पाठ्यक्रम मे ऐसे अनुभव के ऐसे विषयो, क्रियाओ, घटनाओ, और वस्तुओं को सम्मिलित किया जाना चाहिए, जो छात्रो को समस्त मानव जाति के ~~लिए~~ अनुभवों की जानकारी कराये।

2 जीवन से सम्बन्धित

पाठ्यक्रम मे वही विषय वस्तु और क्रियाएँ सम्मिलित की जानी चाहिए जो किसी रूप मे छात्रो के वर्तमान जीवन से सम्बन्धित हो और भावी जीवन के लिए उपयोगी हो।

3. रुचियाँ और योग्यताएँ

पाठ्यक्रम प्रतिमान का तीसरा आधार छात्रो की रुचियां और योग्यताएं हैं। कक्षा या श्रेणीय स्तर के विशेष छात्रो की रुचियों, योग्यताओ, आकांक्षाओं और आवश्यकताओ के अनुसार ही पाठ्य-वस्तु का चयन किया जाना चाहिए।

P.T.O.

4 रचनात्मक शक्तियों का विकास

बालको मे किसी न किसी क्षे० मे रचनात्मक और सृजनात्मक कार्य करने की योग्यता होती है, इसलिए पाठ्यक्रम मे ऐसी व्यवस्था होनी चाहिए कि बालक अपनी इन शक्तियो का अपनी योग्यतानुसार अधिकाधिक विकास कर सके।

5 लोकतान्त्रिक भावना का विकास

आज का युग लोकतन्त्र का युग है। जनसंख्या की दृष्टि से भारत दुनिया का सबसे बड़ा लोकतन्त्र है। इसलिए छात्रो मे लोकतान्त्रिक की भावना का विकास करना पाठ्यक्रम का एक अत्यन्त महत्वपूर्ण कार्य है। पाठ्यक्रम मे ऐसे विषय और क्रियाएं समाहित होनी चाहिए जिनसे छात्रो मे लोकतान्त्रिक मूल्यों और आदर्शों के प्रति प्रेम, आस्था, और विश्वास पैदा हो।

6 सामाजिकता का विकास

पाठ्यक्रम मे ऐसे विषय और क्रियाएँ सम्मिलित किये जाने चाहिए जो छात्रो का सामाजिक विकास करने मे सहायक हो।

7 सहसम्बन्ध की स्थापना

पाठ्यक्रम प्रतिमान का एक मुख्य आधार विभिन्न विषयो मे और विषय की विभिन्न विधाओ मे सहसम्बन्ध की स्थापना है।

P.T.O.

Scanned with CamScanner

8 व्यक्तिगत विभिन्नताएँ

मनोविज्ञान ने यह सिद्ध किया है कि प्रत्येक बालक एक-दूसरे से भिन्न होता है, और उसका एक विशिष्ट व्यक्तित्व होता है। उसकी योग्यताएँ, क्षमताएँ, दक्षताएँ और रुचियाँ अलग-2 होती हैं, अतः पाठ्यक्रम निर्माण मे वैयक्तिक विभिन्नताओ का ध्यान रखा जाना चाहिए।

9 अग्रदर्शिता

पाठ्यक्रम की विषय वस्तु मे ऐसे विषय और क्रियाएँ होनी चाहिए, जिनसे छात्र अपने भावी जीवन मे आने वाली समस्याओ का सामना कर सके, और सफल जीवनयापन कर सके।

रायबर्न के अनुसार – "बालक जो कुछ विद्यालय मे सीखता है, उसके द्वारा उसमे ऐसी योग्यता आनी चाहिए कि वह जीवन की परिस्थितियों से समायोजन कर सके और आवश्यकता पड़ने पर परिस्थितियों मे परिवर्तन ला सके।"

10 पर्याप्त समय की व्यवस्था

पाठ्यक्रम प्रतिमान का एक प्रमुख आधार पर्याप्त समय की व्यवस्था करने का है। एक विषय के पाठ्यक्रम को पूरा करने के लिए जितने समय की आवश्यकता हो, उतना ही समय उसके लिए दिया जाना चाहिए। न उससे कम और न उससे अधिक।

* Complete This Topic Next Turn.

Thankyou

by
Mr. Praveen Ray
Asst. Pro
B.R.C. Deoband.

Scanned with CamScanner